

मेरी मर्कट महारानी-द्वार तुम्हारे आये
 मेरी मर्कट महारानी-द्वार तुम्हारे आये
 होठों की कम्पन मर्कट देखो
 रोके नहीं रुकाये ॥२॥

द्वार तुम्हारे-----मेरी मर्कट-----

भर नयनों में नीर धीरे जब
 दूटे कौन बंधाये ॥२॥

द्वार तुम्हारे-----मेरी मर्कट-----

मन पुनीत पावन निर्मल हो
 नित पल तुमको ध्याये ॥२॥

द्वार तुम्हारे-----मेरी मर्कट-----

पल में रूप उनेकों धरती
 झंझू देख घबराये ॥२॥

द्वार तुम्हारे--मेरी मर्कट-----

हैं अबोध नादान "श्रीबाबा श्री" तेरो
 फक्कड़ भी कहलाये ॥२॥

द्वार तुम्हारे-----

मेरी मर्कट-----